सुनो अपने रब (पालनहार)की

शम्स पीरज़ादा (रह.)

हिंदी अनुवाद ; **मुहम्मद नसरुल्लाह (एम.ए.)**

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९, मुहम्मद अली रोड, मुंबई-४०० ००३
फोन ; २३४६५००५

...... 5th Edition, September. 2015
...... 2,000

Price Rs. 14/-

विषय सूची

पृष्ट	शीर्षक
३.	प्रकाशक के विचार
५.	प्रस्तावना
६.	ज़रा सोचिए
८.	अपने रब की पहचान
९.	मनुष्य और ब्रहमाण्ड से संबंधित मौलिक प्रश्न
१०.	कुर्आन का आह्वान
१६.	अल्लाह का ग्रथं
१७.	स्पष्ट शिक्षाऐं
१८.	शैतान से होशियार
१९.	दुनिया की वर्तमान स्थिति न्याय को पुकार रही है !
२०.	कुर्आन की चेतावनी
३०.	ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी
३७.	प्रश्न चिन्ह
३८.	आप का फैसला

بسم الله الرحمن الرحيم

(अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है)

प्रकाशक के विचार

हमारे पालनहार ने सारे मनुष्यों को एक जीव (आदम)से पैदा किया। हिन्दु ,मुस्लिम ,सिख, ईसाई, तथा पारसी सब आपस में भाई हैं। इसी प्रकार इस्लाम सिर्फ मुसलमानों का धर्म नहीं है।बल्कि पालनहार की ओर से मानवता के आदर्श हज़रत मुहम्मद (सल्ललललाहु अलैहि व सल्लम) पर क़ुरआन के माध्यम से सारे मानव जाति के लिए भेजा हुआ धर्म (दीन) है।यह तमाम मनुष्यों के लिए अनुदेश ज्योती (नूरे हिदायत)है। जिस तरह वायु तथा प्रकाश पर किसी विशेष समूह (क़ौम) का अधिकार नहीं, इसी प्रकार इस्लाम पर भी किसी विशेष समूह (क़ौम) की ठेकेदारी नहीं है। इस्लाम पालनहार का है, पालनहार की तरफ से है,पालनहार के बन्दों के लिए है।

क़ुरआन की जो शिक्षाऐं हैं वह नई नहीं हैं। दुनिया के विभिन्न देशों में बहुत से प्रेषित (अम्बिया) के माध्यम से अपना पालनहार, पहले भी उन्हें भेजता रहा है। दुर्भाग्य यह कि उन्हें भुला जरुर दिया गया है ।

हमें विश्वास है कि यही वह शिक्षाऐं हैं जिन का प्रसार भारत में भी पालनहार के भेजे हुए प्रेषितों के माध्यम से हुआ होगा । ज़माने के गुज़रने के साथ एवं दूसरे कारणों से उन की तरफ से दुर्लक्ष करने के बावजूद यह शिक्षाऐं पुराने ग्रन्थों में पाई जाती हैं ।

हमारे पालनहार की बड़ी कृपा है कि उस ने असली शिक्षाओं को प्रमाणिक तरिक़े से बिना किसी परिवर्तन, या मिलावट के क़ुरआन की शकल में हम तक पहुँचा दिया है । अब हमारा कर्तव्य क्या होता है? यह हम खुद समझ सकते हैं ।

हम अपने गैर मुस्लिम भाईयों से अत्यन्त सहानुभूति तथा हमदरदी के साथ इस पुस्तिका को पढ़ने तथा इस पर विचार करने का निमंत्रण देते हैं।''वमा अलैना इल-लल बलाग़'' हमारा कार्य पहुँचाना है। तथा ''ला इकराहा फिद-दीन'' धर्म में ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं ।

पालनहार से प्रार्थना है कि वह सारे मानव जाती को अपने पालनहार को पहचानने तथा उस की शिक्षाओं पर अमल करने की तौफ़िक़ दे । (आमीन)

मुहम्मद सिद्दिक़ क़ुरैशी
सेक्रेटरी
इदारा दअवतुल क़ुरआन
मुम्बई ४०००० ३

بسم الله الرحمن الرحيم

(अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है)

प्रस्तावना

हमारे आस पास करोड़ो लोग ऐसे हैं जो अपने रब (पालनहार) को नहीं पहचानते और न उन्हें इस बात की खबर है कि मरने के बाद क्या होगा और न ही इस बात से अवगत हैं कि उन के रब (पालनहार) के समक्ष पेशी का दिन निश्चित है जब कि कर्मों के अनुसार इनाम अथवा दण्ड का फैसला सुना दिया जाएगा !

इस ग़फ़लत से उन्हें जगाना, उन्हें उनके रब (पालनहार) की ओर बुलाना और अन्ततः हिसाब के अन्जाम से उन्हें सावधान करना हमारा सब से पहला फ़र्ज़ तथा दीनी ज़िम्मेदारी है और मानवता के हितौषी होने का तक़ाज़ा भी !यह पुस्तिका इसी उद्देश्य से लिखी गई है और कोशिश की गई है कि इस विषय से संबन्धित मोटी और बुनियादी बातें सादा और दिल को छू लेने वाले अन्दाज़ में पेश की जाऐं ताकि ग़फ़लत की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले चौंक जाऐं और हिदायत अथवा सीधे मार्ग को स्वीकार कर लें तथा इनकार करने की सूरत में हुज्जत पूरी हो जाए और क़ियामत के दिन वे यह न कह सकें कि इस अनजाम से हमें उन लोगों ने अवगत नहीं कराया था जो अपने रब पर ईमान रखते थे !

हम अपनी इस ज़िम्मेदारी को केवल इस पुस्तिका को छाप कर पूरा नहीं कर सकते बल्कि ज़रूरी है कि इसे अधिक से अधिक फैलाया जाए । उर्दू के बाद अब हिन्दी में यह पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है ताकि सत्य को अपना लेने का जन आहवान हो। आशा है कि पाठकगण इस को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे ।

وَمَا عَلَيْنَا اِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِين

शम्स पीरज़ादा

इदारा दअवतुल क़ुरआन
५९,मुहम्मद अली रोड,
मुम्बई ४०००० ३

بسم الله الرحمن الرحيم

ज़रा सोचिये !

क्या आप ने कभी इस बात पर विचार किया कि आप की रचना किस तरह हुई? एक तुच्छ पदार्थ से जिसने विभिन्न परिस्थितियों एवं विभिन्न चरणों से गुज़र कर इन्सान का रूप धार लिया । शुरू में आप अपने अस्तित्व से बिलकुल बेखबर थे मगर धीरे धीरे आप में विवेक जागता गया और सोचने समझने की क्षमता पैदा हो गई यहाँ तक कि आप इस जगत की सर्वाधिक विवेकशील हस्ती बन गए !

प्रश्न यह है कि सोचने समझने की यह शक्ति और यह विवेक कहाँ से आया ? क्या मनुष्य स्वयं अपना रचयता है ? अगर है तो उस ने अपने को अपनी रचना के पश्चात एक मुद्दत तक कुछ न जानने की फिर एक लम्बी अवधि तक कुछ कुछ जानने की स्थिति में क्यों रखा? अगर वह स्वयं अपना रचयता है तो होना यह चाहिए था कि वह पूरे विवेक तथा पूरी जानकारी के साथ अपने को अस्तित्व में लाता। परन्तु उस की बेबसी इस बात की साक्षी है कि उस ने स्वयं अपनी रचना नहीं की फिर एक समय आता है कि यह एक विवेकशील मनुष्य मौत की गोद में सो जाता है। उस समय उस का शरीर तो मौजूद होता है परन्तु सोचने समझने की शक्ति अथवा विवेक बाक़ी नहीं रहता ! अब प्रश्न यह है कि यदि मनुष्य ने स्वयं अपने आप को बना लिया है तो उसे मौत क्यों आई और उस का विवेक उस से कैसे जुदा हुआ? और यदि वह आकस्मिक घटना के तौर पर पैदा हो गया है तो उसके अन्दर ज्ञान एवं नीति के कार्यक्रम वा तत्वपूर्ण क्रम बद्धता कहाँ से आ गई ?

मनुष्य जब पैदा होता है तो बहुत ही कमज़ोर होता है यहाँ तक कि जब तक कोई उसे कुछ खिलाए नहीं वह अपना खाना हासिल नहीं कर सकता परन्तु धीरे धीरे उस की शक्ति में वृद्धि होती रहती है और वह अपनी जवानी को पहुँचता है तो न केवल शक्तिशाली बन जाना है बल्कि समस्त

वस्तुओं पर क़ाबू पाने की शक्ति भी उसे प्राप्त हो जाती हैं। अगर आदमी स्वयं अपना रचयता है तो उसने अपने आपको कमज़ोर हालत में क्यों पैदा किया और अपने को ऐसी सृष्टि के साँचे में क्यों ढाला जिस पर बुढ़ापा आता है और उस की शक्ति निचुड़ कर कम हो जाती है ? और यदि आकस्मित घटना के तौर पर पैदा हुआ है तो उस में ये परिवर्तन कौन करता है ?

इन्सानों में मर्द भी पैदा होते हैं और औरतें भी । कोई व्यक्ति भी न अपनी मर्जी से मर्द होता है और न औरत । यदि मनुष्य स्वयं अपना रचयता है तो अपनी इच्छा एवं अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपने आप को क्यों नहीं बनाता? फिर संसार में स्त्री एवं पुरुष एक ख़ास औसत से जो सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है, पैदा होते हैं । किसी भी युग में ऐसा नहीं हुआ कि पुरुष ही पुरुष पैदा हो गए हों या औरतें ही औरतें पैदा हो गई हों । अगर ऐसा होता तो मनुष्य की ज़िन्दगी अजीरन हो जाती। यदि मनुष्य की रचना आप ही आप हुई तो सब को एक ही आकृति में ढला हुआ होना चाहिए था। फिर यह स्त्री पुरुष का विभेद कैसे और स्त्री एवं पुरुष जाति का एक उचित एवं संतुलित संख्या में पैदा होना किस तरह संभव हुआ ?

प्रत्येक व्यक्ति की शकल सूरत दूसरे से भिन्न होती है।यदि मनुष्य की पैदाइश आकस्मित घटना स्वरूप हुई होती और उस में किसी का हाथ न होता तो सब लोग एक ही साँचे में ढल जाते और एक ही शकल सूरत के पैदा होते, उस समय कोई किसी को पहचान नहीं पाता । किन्तु हम देखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का माडल अलग अलग होता है तो यह कौन है जो हर एक व्यक्ति को अलग अलग साँचे में ढालता है?

ये कुछ उदाहरणार्थ प्रश्न हैं जो मनुष्य की जाति तथा अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं । वरना इस जगत की पूरी व्यवस्था और पूरा वातावरण सोचने और विचार करने का न्योता देता है कि यह विशाल ब्रह्मांड जिस में अत्यन्त उच्च कोटि का ताल मेल तथा प्रबधं व्यवस्था है और जिस की कोई वस्तु निरुद्देश्य नहीं, किस तरह अस्तित्व में आई !

क़ुर्आन का न्यायोचित प्रश्न है :-

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

(سورۂ طورآیت۳۵)

''क्या ये किसी के पैदा किये बग़ैर पैदा हो गये हैं, या ये स्वयं अपने रचयता हैं ''?

(सूरह तूर :३५)

इस का तार्किक उत्तर एक ही है और वह यह है कि इन्सान सहित पूरे ब्रह्मांड को एक पैदा करने वाले ने पैदा किया है वही सब का रब (मालिक) है । यह बात न केवल तार्किक एवं उचित है बल्कि मनुष्य के स्वभाव और उस के अन्तर्मन की पुकार भी । क्यों कि मनुष्य का स्वाभाव अपने रब, अपने प्रभु अपने पैदा करने तथा पालने वाले से परिचित है और वही उस का सही मार्गदर्शन करता है । अपने रब से बेगाना करने वाली और ग़लत रास्ते पर डालने वाली वस्तु तो अपनी इच्छाऐं है जो अंधी होती हैं न कि प्राकृतिक स्वाभाव !

अपने रब (Lord) की पहचान

मनुष्य यद्यपि अपने रब (पालनहार)को देख नहीं पाता परन्तु उसकी अनगिनत निशानियों को देख कर जो धरती और आकाश में फैली हुई हैं तथा उस के अस्तित्व में निहित हैं,उस के सारे जगत के रब (मालिक) होने का विश्वास पैदा हो जाता है और उस को मानने के लिए किसी ठेठ, गाढ़ी एवं फलसफियाना बहस की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती।रब्बुल आलमीन अर्थात सारे जहान का रब (मालिक) इस जगत की सब से बड़ी और उभरी हुई वास्तविकता है।यदि मनुष्य ने इस सच्चाई को न पाया तो उस ने दुनिया में कुछ भी नहीं पाया।क्यों की मनुष्य का ख़ास गुण ज्ञान है और वह जो कुछ पा सकता है, अपने तथा इस जगत के बारे में सत्य का ज्ञान प्राप्त कर के ही पा सकता है । और जब वह एक ऐसी सच्चाई से ही अनभिज्ञ रहा जो जीवन की समस्याओं के हल की कुंजी है तो उस पर सत्य का मार्ग गुम हो गया और ख़ैर एवं भलाई के दरवाज़े बन्द हो गए । अब वह दुनिया में न अपनी सही पोज़ीशन निर्धारित कर सकता और न अपनी जिम्मेदारियों को अदा कर सकता है । जिस व्यक्ति को

अपनी उत्पत्ति अथवा अपनी शुरूआत का ज्ञान न हो उस को अपने अन्जाम और अंत का ज्ञान किस तरह हो सकता है?परन्तु दुनिया में करोड़ों लोग ऐसे हैं जो अपने रब (पालनहार)से बिलकुल बेख़बर है जिस के फलस्वरूप उन का जीवन पूरी तरह निरुद्देश्य हो कर रह गया है । उन्हों ने इस दुनिया को खेल कूद की जगह (क्रीड़ा स्थल) समझ लिया है और उन्हें इस बात का कोई एहसास नहीं है कि आगे क्या कुछ सामने आने वाला है।अगर दुनिया वास्तव में खेलकूद की जगह होती तो प्रत्येक व्यक्ति ख़ुश और मस्त नज़र आता तथा दुःख दर्द और चिन्ता एवं कष्ट उसे छूते भी नहीं । परन्तु सच्चाई यह है कि यदि मनुष्य को खुशी के कुछ क्षण भी मुयस्सर आ जाते है तो दुःख और चिन्ता के बादल भी उस पर छा जाते हैं और आज तो पूरी इन्सानियत दुखी बन कर रह गई है !

मनुष्य और ब्रह्मांड से सम्बन्धित मौलिक प्रश्न ?

यहाँ यह प्रश्न पैदा होता है कि यह दुनिया अगर खेल कूद की जगह नहीं है तो फिर इस का उद्देश्य आखिर क्या है ? इस का सही उत्तर वही हस्ती दे सकती है जिस ने इस को रचा है और जो इस से पूरी तरह परिचित है सही मार्ग दर्शन के लिए उसी की ओर पलटना चाहिए । उस की रहनुमाई हमारे सामने क़ुर्आन के रूप में मौजूद है जिस के ईश ग्रंथ होने में तनिक भी संदेह की गुंजाइश नहीं है क्यों कि इस में जो बातें भी बयान की गई हैं वे शुरू से आखिर तक केवल सत्य है और उस में सारे बुनियादी प्रश्नों का उत्तर दिया गया है जो मनुष्य की अपनी तथा ब्रह्मांड की संरचना से सम्बन्धित मस्तिष्क में उभरते हैं जैसे कि इस दुनिया को किसने बनाया ? क्यों बनाया ? मनुष्य को बनाने का उद्देश्य क्या है? उस के जीवन का आरंभ किस प्रकार हुआ और उस का अभीष्ट लक्ष्य क्या है । वे कौन से कर्म हैं जो उस की कामयाबी की ज़मानत हैं और वह कौन सा रवैया तथा कौन सा मार्ग है जो उस को विनाश से दोचार करनेवाला है? मरने के बाद कोई जीवन है या नहीं और अगर है तो वह कैसा है? मनुष्य का कर्म एक निष्प्रभाव एवं लाहासिल चीज़ है अथवा अनिवार्य रूप से उस का कोई परिणाम प्रकट होने वाला है । यदि परिणाम ज़ाहिर होने

वाले हैं तो वे कब और कैसे जाहिर होंगें।यह दुनिया यूँ ही चलती रहे गी या इस के अन्दर से कोई और दुनिया जन्म लेने वाली है? अगर कोई और दुनिया जन्म लेने वाली है तो उस की क्या परिस्थितियाँ होंगी ? इन सारे प्रश्नों का विस्तृत एवं संतोषजनक उत्तर क़ुर्आन में मौजूद है जो उस के अल्लाह की किताब होने का स्पष्ट प्रमाण है।जब कि दुनिया का कोई ग्रंथ ऐसा नहीं है जो इन बुनियादी प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट एवं विस्तृत रूप से देता हो और जिस से दिलो में उस के सत्य होने का विश्वास पैदा होता हो। फिर यह किताब (ग्रथं) अपनी हैसियत, अपनी शैली और विषयों की दृष्टि से एक बेमिसाल किताब है जो एक चैलेन्ज बन कर अवतारित हुई है कि दुनिया के सारे इन्सान मिल कर ऐसी किताब नहीं तैयार कर सकते !

क़ुर्आन का आहवान

इस किताब में जिन मौलिक वास्तविकताओं को प्रस्तुत कर के उन पर ईमान लाने अर्थात उसे मान लेने की निमंत्रणा दी गई हैं वे निम्मलिखित हैं !

(A) मनुष्य का और संपूर्ण ब्रह्मांड का एक रचयता अथवा एक सृष्टा है। वह सब का पालनकर्ता, स्वामी और शासक है।दूसरे शब्दों में वही सब का रब (मालिक) है,समूचे ब्रह्मांड पर उसकी सत्ता स्थापित है। वह हर प्रकार के दोष, त्रुटि तथा कमज़ोरी से पाक है।उस जैसा कोई नहीं इस लिए इस को सृष्टियों जैसा नहीं समझा जा सकता। उस की न पत्नी है और न सन्तान ।वह ज़बरदस्त शक्तिशाली सामर्थवान है तथा जो चाहे कर ग़ुज़रने वाला।कोई नहीं जो उस के किसी निर्णय को बदल सके।वह जो चाहे वह होता है और जो नहीं चाहता नहीं होता।वह निःस्वार्थ है,किसी की सहायता का मुहताज नहीं बल्कि उलटे सब उस के मुहताज हैं।वही रोज़ी देता है और उस में कमी बेशी भी वही करता है।कोई रोग़ कोई कष्ट उस की मर्जी के बग़ैर नहीं पहुँचता । वही बीमारी से मुक्त करता है तथा कष्टो को दूर करता है अतः उसी को पुकारना और उसी से सहायता माँगना सही है । मुश्किलकुशा (कष्टो का निवारण करने वाला) तथा ग़ौस (फ़रीयादें सुनने और पूरी करने वाला) उस के सिवा कोई नहीं । वह सुनने वाला,

देखनेवाला, जाननेवाला और हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है । वही हाज़िर व नाज़िर (अर्थात् हर जगह मौजूद है तथा सब कुछ देख रहा है) है और दिलों के भेद तक उस पर स्पष्ट हैं।कोई चीज़ भी उस से छिपी नहीं रह सकती।वह ज्ञानवान भी है और तत्वदर्शि भी। उस का कोई काम हिकमत एवं तत्वदर्शिता से ख़ाली नहीं होता । उसने बहुत ही तत्वपूर्ण तरीक़े पर हर चीज़ की तकदीर निर्धारित की है तथा मनुष्य एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांड के लिए अत्यंत तत्वपूर्ण योजना बनाई है।अतः जो कुछ दुनिया में होता है आकस्मिक रूप से नहीं होता बल्कि उसकी नियत योजना के अनुसार होता है।वही जिलाता है और वही मौत देता है और वह इस पर पूरी तरह समर्थ है कि मुर्दों को दोबारा जिन्दा करें !

वह वास्तविक शासक है और राजसिंहासन (अर्श)पर आसीन है। उस की सत्ता हर चीज़ पर स्थापित है और कोई नहीं जो उस के नियंत्रण से बाहर हो । शासन सत्ता **(Sovereignty)**उसी के लिए है तथा उस के आदेशों, नियमों तथा क़ानूनों की पाबन्दी उस के बन्दो पर अनिवार्य है।

वह हर तरह से पूर्ण, हर तरह के गुणों से युक्त है इस लिए उसी के गुण गाए जाने चाहिऐं तथा उसी की प्रशंसा की जानी चाहिए।वह महान, महिमावान और बड़ाई वाला है इस लिए उसी की महिमा और उसी की बड़ाई की चर्चा करनी चाहिए।वह रहमान, दयावान है, उस की दया और उस की रहमत हर चीज़ पर छाई हुई है । और वह रहीम है, अपने वफादार बन्दो को ख़ास रहमत से नवाज़ता है।वह दुआओं अथवा प्रार्थनाओं का सुनने वाला है, उस के बन्दे उस को जहाँ से भी पुकारें वह उनकी पुकार को सुनता है, और अपनी निति तथा अपनी विधि के आनुसार काम करता है। वही है जिस से आशाऐं बाँधी जा सकती हैं और वही है जिस से बन्दों को बेपनाह लगाव और चाह होनी चाहिए ।

वह कठोर दण्ड देने वाला भी है और क्षमा करने वाला भी है । वह न्याय करने वाला है, जो लोग उस का इन्कार करते हैं तथा उस की अवज्ञा का रास्ता अपनाते हैं उन को वह दण्डित करता है।और जो लोग उस पर ईमान ले आते हैं।तथा उस के प्रति खुद को पूरी तरह समर्पित कर के उस

की आज्ञापालन का मार्ग स्वीकार कर लेते हैं उन को वह इनामों से अलंकृत करता है तथा वह अपने बन्दों पर कदापि ज़ुल्म नहीं करता !

वह वास्तव में काम बनाने वाला है उसी पर भरोसा (तवक्कुल)किया जाना चाहिए और वही है जिस से डरते रहना चाहिए।वह अपनी मर्ज़ी का मालिक है।और कोई नहीं जो अपने दबाव से उस से किसी के पक्ष में कोई सिफारिश मनवा सके।वह सब कुछ कर सकता है और उस का एक इशारा किसी चीज़ को अस्तित्व में लाने या मिटाने के लिए काफी है।ध्यानपूर्वक हमारी देख रेख करने वाले उस सर्वोच्च पालनहार का नाम अल्लाह है और उसको दूसरे अच्छे नामों से भी पुकारा जा सकता है ।

इस विस्तार के साथ क़ुर्आन वास्तविक प्रभु की पहचान व परिचय कराता है जो इस किताब की प्रमुखता है।इस के द्वारा मनुष्य अपने पालनहार प्रभु को वास्तव में पहचान लेता है और उस के प्रति प्रेमभाव तथा उस से लगाव उस में पैदा हो जाता है।यही एकेश्वरवाद (तौहिद) है जिस पर क़ुर्आन ईमान लाने का निमंत्रण देता है !

(B) कायनात के ख़ुदा की मर्जी यह हुई कि ज़मीन पर एक ऐसे प्राणी को पैदा किया जाए जिस को अन्य प्राणियों पर श्रेष्ठता प्राप्त हो। अत: मनुष्य को उस ने ऐसे आकार में ढाला और ऐसी शक्ति तथा ऐसी क्षमताऐं प्रदान की कि वह एक श्रेष्ठतम प्राणी बन गया ।उस को ऐसा ज्ञान और ऐसी शक्ति प्रदान की, कि ज़मीन की समस्त वस्तुओं पर उस का बोल बाला हो गया और वह आसमान में भी उड़ान भरने के योग्य हो गया। उस के खाने के लिए उत्तम आहार का प्रबन्ध किया और तन ढापने की भी अभिरूचि उच्च्व कोटि की प्रदान की । अत:आप देख लें कि मनुष्य भाँत भाँत के अच्छे लिबास पहन लेता है जब कि जानवर नंग धड़ंग फिरते रहते हैं । मनुष्य अनाज खाते हैं जब कि जानवर भूसी खाते हैं । मनुष्य स्वादिष्ट फल खाता है जब कि जानवर घास खाते हैं। इस तरह इन्सान के रब (ख़ुदा) की नेमतें उस पर तमाम हो रही हैं और उस के एहसानों तथा उस की मेहरबानीयों की कोई इन्तिहा, कोई सीमा नहीं है !

उस ने इस सारे इनामों से अलंकृत कर के मनुष्य की परीक्षा लेनी

चाही कि वह ये सब कुछ पा कर अपने रब (पालनकर्ता)को पहचानता और उसका कृतज्ञ (अथवा शुक्रगुज़ार बन्दा) बन कर रहता है या नहीं। इस परीक्षा के लिए उस ने दुनिया को परीक्षा स्थल बना कर इन्सान को इस में खड़ा किया है । इस लिए यह दुनिया क्रीड़ा स्थल (अथवा खेल कूद की जगह) नहीं बल्कि परीक्षा स्थल है।और मनुष्य यहाँ खेल कूद के लिए नहीं बल्कि एक गंभीर उद्देश्य के लिए भेजा गया है, और वह है जीवन की उठा पटक में अपने रब के आदेशों पर चलना और अपने अन्दर ऐसे गुण पैदा करना जो उस के नैतिक एवं व्यवहारिक तथा बाह्य एवं आंतरिक जीवन को संवारने वाले और उस को सदा सर्वदा रहने वाले जीवन की सफलता प्रदान करने वाले हैं। यदि वह इन गुणों को अपने अन्दर पैदा करता है तो उस का रब **(Lord)** उस को कभी न मिटने वाली नेमतों से सुशोभित करेगा और यदि वह इन गुणों को अपने अन्दर पैदा नहीं करता तथा अपने रब का उद्दंड बन कर रहता है तो फिर वह कभी समाप्त न होने वाले दण्ड का भागीदार ठहरेगा !

जब मनुष्य का सांसारिक जीवन परीक्षा का जीवन तय पाया तो उस के प्रत्येक कथन और प्रत्येक कर्म का एक परिणाम है। अच्छे कथन और अच्छे कर्म का अच्छा परिणाम तथा बुरे कथन और बुरे कर्म का बुरा परिणाम । इन परिणामों से अवगत कराने के लिए अल्लाह ने क़ियामत (महाप्रलय) का दिन निर्धारित किया है। यह क़ियामत का दिन क्या है ? न्याय का दिन जब कि यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से, और यह आसमान दूसरे आसमान से परिवर्तित किया जाएगा। इस परिवर्तन के समय ब्रह्मांड में अत्यन्त भयानक विस्फोट होगा । और यह पूरी दुनिया बिखर जाएगी, फिर एक नई व्यवस्था नये सिरे से अस्तित्व में आएगी जो कर्मफलों से अवगत कराने के लिए अत्यंत अनुकूल होगी ।

उस रोज़ ब्रह्मांड का वास्तविक रब (मालिक) सारे इन्सानों को जो शुरू से ले कर आखिर तक पैदा हुए और फिर मर खप गए, वह पुन: देह सहित पैदा करेगा । कोई व्यक्ति भी छुटने नहीं पाएगा ।सारे ही लोग जमीन से उखेड़ कर खड़े कर दिए जाऐंगें और मैदाने-हशर में जमा कर

दिए जाऐंगें ताकि अपने कर्मों की अपने भले बुरे कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा बदला पाऐं ।

क़ियामत का दिन अल्लाह के समक्ष पेशी का दिन होगा और एक एक व्यक्ति का कर्मपत्र (आमालनामा) जिस का रिकार्ड करने के लिए दुनिया में फ़रिश्ते नियुक्त किए गए थे उस के हाथ में दिया जाएगा । उस समय प्रत्येक व्यक्ति देख लेगा कि उस का छोटा या बड़ा कोई कर्म ऐसा नहीं जो उस में दर्ज न हुआ हो । उस रोज़ अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति को उस के किये का पूरा पूरा बदला देगा । जो लोग अल्लाह पर इस तरह ईमान लाए होंगे जिस तरह ईमान लाने का आदेश क़ुर्आन में दिया गया है और उस का अनुपालन करते हुए सुकर्मी जीवन गुज़ारा होगा, वे हमेशा के लिए जन्नत **(Paradise)** में दाखिल कर दिए जाऐंगें ! जहाँ उन के लिए न रोटी की समस्या होगी और न कपड़े की और न मकान की, खाने के लिए अच्छी वस्तुऐं, पीने के लिए लज़ीज़ शरबत, पहनने के लिए नफीस कपड़े, रहने के लिए उत्तम और पाकीज़ा मकान। वह हमेशा हमेशा रहने वाले बाग़ों में होंगें और सब से बड़ी बात यह है कि उन्हें उन के रब की रज़ामन्दी तथा उस की प्रसन्नता प्राप्त होगी । इस तरह उन पर उन के रब की तरफ़ से इनामों और रहमतों की बारिश होगी तथा उन्हें दुःख और कष्ट से कभी वास्ता नहीं पड़ेगा । यह है आखिरत की सफलता !

इस के विपरित जिन लोगों ने अपने रब पर ईमान लाने से इन्कार किया होगा और उसकी हिदायत से बेपरवाह हो कर दुनिया में मनमानी करते रहे होंगे वे अपनी बग़ावत और उद्दंडता की सज़ा पा कर रहेंगें चाहे उन्हों ने कुछ अच्छे कर्म कर के दिखाए हों। अल्लाह से कुफ्र अर्थात उसका इन्कार और उसके प्रति उद्दंडता एवं उल्लघंन का रवैया सब से बड़ा गुनाह है।इस के बाद कोई व्यक्ति अपने किसी अच्छे काम पर इनाम का अधिकारी नहीं रहता । ऐसे लोग नरक में झोंक दिए जाऐंगें जहाँ उन्हें आग की दुखदायिनी यातना भुगतनी होंगीं और वह भी हमेशा के लिए ! कैसा दुःखदायी और भयानक अन्जाम है अल्लाह से कुफ्र करने वालों का !

ईनाम और दण्ड का यह मामला क़ियामत के दिन पेश आएगा तथा

जन्नत (स्वर्ग) एवं जहन्नम (नर्क) एक सच्चाई बन कर सामने आचुकी होगी और किसी को भी इन्कार की मजाल न होगी ! कर्मों के ये परिणाम जहाँ प्रकट होंगें और जहाँ इन्सान को हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी गुज़ारना होगी चाहे वह ईनाम और सराहे जाने की ज़िन्दगी हो अथवा दुःख और धुतकारे जाने की जिन्दगी हो । इस को आखिरत **(Hereafter)** की ज़िन्दगी कहते हैं और क़ुर्आन आखिरत पर ईमान लाने की दअवत देता है ।

(C) मनुष्य का रब (अर्थात उस का स्वमी, प्रभु एवं पालनहार) अल्लाह है और उसने जब मनुष्य को परिक्षा स्थल में खड़ा किया है और आख़िरत में प्रत्येक को अपने कर्मों का फल पाना है तो इस का खुला तक़ाज़ा यह है कि अल्लाह मनुष्य को इस बात से अवगत कराए कि वह कौन सी धारणा और वे कौन से कर्म हैं जिन पर आखिरत की सफलता का दारोमदार है और वे कौन सी धारणा तथा कर्म हैं जो आखिरत (परलोक) में विनाश का कारण बनने वाले हैं। इसी तक़ाज़े को पूरा करने के लिए अल्लाह ने अपने रसूल भेजे जिन को अल्लाह तआला ने वह्या के द्वारा अपने दीन और अपने संविधान का ज्ञान प्रदान किया। वह्या (Revelation) एक असाधारण ज्ञान स्त्रोत है अल्लाह और मनुष्य के बीच संपर्क का साधन है जो पैग़म्बरों को ही प्राप्त होता है।अल्लाह तआला ग़ैब और भेद की बातें उनही पर ज़ाहिर करता है और उन्हें किताबें प्रदान करता है ताकि वे उस के संदेश को दूसरे बन्दों तक पूरी तरह पहुँचा दें। रसूल (Messengers of God) अत्यंत विश्वासपात्र, अमानतदार और ऊँचे चरित्र के होते हैं जो अल्लाह की बातों को बग़ैर किसी कमी बेशी के पहुँचा देते हैं इस तरह ख़ुदा के बन्दों पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो जाती है अर्थात तर्क स्थापित हो जाता है।रसूलों के इस सिलसिले को रिसालत कहते हैं जिस पर क़ुर्आन ईमान लाने की दअवत देता है।और रिसालत पर ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता जब तक कि फ़रिश्तों पर और उन के द्वारा रसूलों पर अवतरित की जाने वाली किताबों पर ईमान न लाया जाए।

रसूल दुनिया की हर क़ौम में भेजे गए और वे दुनिया के विभिन्न इलाक़ों में आते रहे। अल्लाह ने आख़िरी रसूल की हैसियत से हज़रत

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का में भेजा और उन पर अपनी आखरी किताब क़ुर्आन नाज़िल फ़रमाई। जो इन्सान की हिदायत के लिए एक संपूर्ण पुस्तक है।और चूँ कि इस की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने ली है इस लिए यह किताब अपनी असली सूरत में मौजूद है।तो अब किसी नए नबी (पैगंबर) या रसूल की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती ! इस लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबियों के सिलसिले को खत्म करनेवाले (ख़ातमुन्नबिय्यीन)अर्थात आखिरी नबी बनाया।क़ुर्आन सारे रसूलों पर ईमान लाने की दअवत देता है जिन की आखरी कड़ी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।यह रिसालत पर ईमान है ।

अल्लाह की किताब

क़ुर्आन अरबी में है और अपने असली रूप में मौजूद है । इस किताब के मज़मून खुद इस बात की गवाही देते हैं कि यह निःसंदेह अल्लाह ही की किताब है और उस में जो बातें भी पेश की गई हैं वह दिल को लगती हैं और बेहद तत्वपूर्ण तथा तर्कपूर्ण है।अनुवाद की सहायता से भी आदमी इस का अध्ययन कर के इस के अल्लाह की किताब होने के बारे में संतुष्टि प्राप्त कर सकता है।क़ुर्आन के अलावा आज दुनिया में कोई किताब ऐसी नहीं जिस का शब्द शब्द अल्लाह का उतारा हुआ हो।क्यों कि प्रत्येक ग्रथं में लोगों ने काट छाँट कर दी है।इस अनर्थ से केवल क़ुर्आन सुरक्षित है।और यह भी सच्ची बात है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को केवल अरबों की तरफ रसूल बना कर नहीं भेजा गया था बल्कि सारी दुनियावालों के लिए और कियामत तक के लिए रसूल बना कर भेजा गया है तथा क़ुर्आन भी किसी जाति, किसी राष्ट्र अथवा किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं बल्कि पूरी इन्सानियत के लिए है तथा हर दौर और हर मुल्क के लोगों के लिए हिदायत की अर्थात् सत्यमार्ग दिखाने वाली किताब है !

आज यह किताब हमारे सामने स्पष्ट रूप से मौजूद है और जब वह हमारे ईश्वर की ओर से है तो फिर इस से ग़फ़लत कैसी ? अपने

पालनकर्ता (ईश्वर) की किताब पढ़ने तथा उस के आदेश मालूम करने के लिए कौन है जो व्याकुल नहीं होगा। परन्तु लोगों की भारी संख्या ऐसी है जो नहीं जानती कि क़ुर्आन उनके पालनकर्ता (ईश्वर) का कलाम है जो उस ने लोगों के मार्गदर्शन के लिए उतारा है और सच्ची बात यह है कि लोग दुनिया परस्ती और भौतिक लाभ में ऐसे लीन हैं कि उन को न सत्य की तलाश है और न इस बात की चिन्ता कि मौत के बाद क्या कुछ सामने आने वाला है ।

स्पष्ट शिक्षाऐं

और यह भी एक वास्तविकता है कि क़ुर्आन तथा उस के पैग़म्बर की शिक्षाऐं बिलकुल स्पष्ट, विश्वव्यापी सच्चाइयों (Universal Truth) पर आधारित तथा न्याय एवं समता का स्पष्ट उदाहरण हैं।एक अकेले सच्चे रब (खुदा) की इबादत के ऐसे तौर तरीक़े पेश किए गए हैं कि उन से बेहतर तरीक़ो की इन्सान कल्पना भी नहीं कर सकता। नमाज़ को देख लीजिए, क़ियाम (खड़ा होना) रूकू (झुकना) सज्दा (माथा टेकना)कैसे बेहतरीन कर्म हैं।क़ुर्आन की तिलावत ही कैसी भावपूर्ण होती है, गुणगान के बोल ऐसे जैसे वास्तविकता दिल पर दस्तक दे।मस्जिद में जब पंक्तिबध्य हो कर नमाज़ अदा की जाती है तो वह दृश्य कितना आत्मविभोर कर देने वाला होता है और मानव एकता व समानता का कितना अच्छा पाठ मिलता है। नैतिकता एवं आचारसंहिता के एक ऐसे आदर्श को प्रस्तुत किया गया है जो मनुष्य को उस की पूर्णतः तक पहुँचा देता है।एक दूसरे के अधिकार और कर्तव्य इस तरह से निर्धारित किए गए हैं कि इन्सानी भाईचारगी का रिश्ता मज़बूत हो जाता है। शादी ब्याह को बहुत ही आसान बना दिया गया है और स्त्री पुरूष के सम्बन्धो में मधुरता पैदा करने का सामान किया गया है।अपनी कमाई को पाक रखने तथा कारोबार एवं व्यपार में जायज़ साधन अपनाने के निर्देश दिये गए हैं ।कला और संस्कृति को हर तरह की बेहयाई और खुराफ़ात से पाक रखने के आदेश दिये गए हैं और राजनीति तथा सामाजिक जीवन को न्यायिक उसूलों पर उठाने तथा विकसित करने का सामान किया गया है और इन्सानी बराबरी का

उच्च उदाहरण स्थापित किया गया है क्या मानव जीवन में यह न्याय,यह संतुलन, यह पाकिज़गी, यह किरदार की बुलन्दी, इबादत की यह ख़ूबसूरती, व्यवहार में सफाई और शालीनता, कारोबार में यह ईमानदारी और राजनीति में न्याय एवं सत्यप्रियता, इन शिक्षाओं के सही और ईश्वरीय होने का खुला सबूत नहीं है? फिर इस ईश्वरीय जीवन व्यवस्था को छोड़ कर ज़िन्दगी बसर करने के दूसरे तौर तरीक़ों को अपनाना क्यों और किस तरह सही हो सकता है ?

शैतान से होशियार

क़ुर्आन आगाह करता है कि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है, उस से होशियार रहें । शैतान (इब्लीस) एक सृष्टि है जो जिन्नो में से हैं और जिन्नो को अल्लाह ने आग से पैदा किया था । वह दिखाई न देने वाली सृष्टि है। शैतान को इन्सान से इसलिए दुश्मनी है कि अल्लाह ने इन्सान को मिट्टी से पैदा कर के उसे जिन्नो पर श्रेष्ठता प्रदान कर दी । इब्लीस (शैतान)ने अल्लाह की अवज्ञा की और घमंड किया इस लिए वह धुत्कारा गया ।अब उस का काम इन्सानों को गुमराह करना है । और अल्लाह ने उस को यह मोहलत इस लिए दी है कि इन्सान की आज़माइश हो इस बात में कि कौन शैतान के उकसाने में आता है और कौन अपने रब की हिदायत पर अडिग रहता है !शैतान को यह शक्ति नहीं प्रदान की गई है कि वह बलपूर्वक इन्सानों को गुमराह करें बल्कि उसे इस बात का मौक़ा दिया गया है कि वह दिलों में वहम और वस्वसा डाले और बुराई पर आमादा करे।उस से प्रभावित होना या न होना इन्सान के अपने बस में है । जो लोग शैतान के असर से बचना चाहते हैं उन को अल्लाह तआला उस के फितने से बचने का साहस प्रदान करता है।यह हमारे रब का बहुत बड़ा एहसान है कि उस ने हम को हमारे खुले दुश्मन से आगाह कर दिया है ताकि उस के धोखे में हम न आऐं । इब्लीस को यद्यपि हम देख नहीं पाते किन्तु दिलों में विचारों का उत्पन्न होना और फिर इन्सानी आबादियों का बिगाड़ एवं उपद्रवों से भर जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इन्सान का एक दुश्मन है जो उसे बुराई पर उकसाता रहता है !

दुसरी तरफ़ इन्सानों को अच्छाई और भलाई की ओर प्रेरित करने के

लिए अल्लाह तआला ने नबियों का सिलसिला चलाया और किताबें नाज़िल कीं जिन के द्वारा ईमान से भरपूर सुकर्मी जीवन बिताने वालों को कामयाबी की ख़ुशख़बरी सुना दि गई। मतलब यह कि दुनिया में भलाई और बुराई दोनों की ओर आकर्षण का सामान पैदा कर दिया गया और मनुष्य को उन में पहचान करने और अपने लिए दोनों में से किसी एक को चुन लेने का अवसर प्रदान कर दिया है।इसी में उस की आज़माइश है !

दुनिया की वर्तमान स्थिति न्याय को पुकार रही है

दुनिया की वर्तमान स्थिति बहुत ही विस्फोटक और संगीन है तथा इन्सान को सोचने तथा विचार करने का निमंत्रण दे रही है कि कोई देश ऐसा नहीं जहाँ न्याय की सत्ता हो । कमज़ोरों के अधिकार छिने जा रहें हैं तथा अन्याय एवं अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।इन्सान के खून की कोई क़ीमत नहीं रह गई । और उग्रवाद एवं आतंकवाद ने सुख शांति नष्ट कर दी है। क़ानून के रक्षक क़ानून की मिट्टी पलीद कर रहें हैं और भ्रष्टाचार (Corruption) ने सोसायटी में एक नासूर का रूप धार लिया है।नैतिक पतन का यह हाल है कि बेटा बाप पर हाथ उठाता है और शागिर्द उस्ताद की पिटाई करता है।औरत पूरी बेहयाई के साथ मर्दों के सामने अपना प्रदर्शन कर रही है । नग्नता ने फैशन का रूप धार लिया है,अश्लील गाने कानों में ज़हर घोल रहे हैं और कामभावना को उत्तेजित कर के व्यभिचार पर आमादा कर रहे हैं । जिन के हाथों में धन दौलत है वे उस को बेकार के नुमाइशी कामों में बेदरदी से खर्च कर रहें हैं और उन्हें इस का कोई एहसास नहीं है कि इस धन से कितने ही ग़रीबों की समस्याऐं हल हो सकती हैं।सूद ख़ोरी (ब्याज़)ने पूरी आर्थिक व्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर के लोगों को बहुत ही स्वार्थी बना दिया है।कारोबार में लूटखसोट आम है और शासन एवं प्रशासन के समस्त विभागों में रिश्वत का बाज़ार गर्म है । कमीने लोग उभर रहे हैं और शरीफ लोग दब कर रहने के लिए मजबूर हैं।खूँख्वार इन्सानो का राज है और राजनीति में निकम्मे लोगों का तूती बोल रहा है। हूकूमत की कुर्सी पर ऐसा ही व्यक्ति बिराजमान नज़र आता है जो चरित्र की दृष्टि से बहुत हलका,बुराइयों तथा अन्याय को बढ़ावा

देने वाला, बिगाड़ को हवा देने वाला उपद्रोवी है।इस के अलावा युद्धों ने बड़े पैमाने पर इन्सान की तबाही का सामान कर रखा है। साइंस और टेकनोलॉजी की तरक़्क़ी ने अगर इन्सान को अभ्यास एवं नागरिकता के ऊँचे स्तर पर पहुँचाया है तो उस के लिए ख़तरे भी बहुत बढ़ा दिये हैं।ऐटम बम का प्रयोग सारी तरक़्क़ी को मलियामेट करने के लिए काफ़ी है।एक शक्तिशाली बम लाख़ो व्यक्तियों को आन की आन में मौत के घाट उतार देता है।तो क्या यह दुनिया अंधेर नगरी है ? क्या यह ज़िन्दगी इन्सान को झंझोड़ नहीं रही है, कि वह समय दूर नहीं जब वह सर्वोच्च हस्ती जो सारे जहान का मालिक है, अदालत बरपा करेगा और मज़लूमों की फ़रियादें सुनी जाएेंगी और प्रत्येक व्यक्ति देख लेगा कि उस ने आने वाले जीवन के लिए क्या सामान किया था? उस का रब उस से हरगिज़ ग़ाफ़िल नहीं !

क़ुर्आन की चेतावनी

न्याय के उस दिन के आने से पहले क़ुर्आन स्पष्ट शब्दों में सावधान करता है कि :

१. सारे इन्सानो को क़ुर्आन लाने वाले पैगंबर पर ईमान लाने की तथा उस की पैरवी करने की निमंत्रण:

قل يا أيها الناس إني رسول الله
إليكم جميعا الذي له ملك
السموت والأرض لا إله إلا هو يحي
ويميت فآمنوا بالله ورسوله النبي
الأمي الذي يؤمن بالله وكلمته واتبعوه
لعلكم تهتدون ﴿١٥٨﴾

(سورۃ الاعراف:١٥٨)

''कहो ऐ लोगो ! मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का रसूल (ईश दूत) हूँ जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। उस के सिवा कोई ख़ुदा (ईश्वर) नहीं। वही जिलाता है और मारता है । अतः ईमान लाओ अल्लाह पर, उस के रसूल नबी उम्मी पर, जो अल्लाह और उस के फ़रमानों पर ईमान रखता है और पैरवी करो उस की ताकि तुम हिदायत पाओ ! (सूरह अल् आराफ़ :१५८)

२. अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान न लाना कुफ्र है ।

ومن لم يؤمن بالله ورسوله فإنا
أعتدنا للكفرين سعيرا ﴿١٣﴾

(سورۃ الفتح-١٣)

''और जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान नहीं लाया तो ऐसे क़ाफ़िरों के लिए हम ने भड़कती आग तैयार कर रखी है'' !

(सूरह 'फत्ह : १३)

३. इबादत अल्लाह के सिवा किसी की जायज़ (उचित) नहीं ।

أن لا تعبدوا إلا الله إني أخاف
عليكم عذاب يوم أليم ﴿٢٦﴾

(سورہ ہود-٢٦)

'' कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (उपासना) न करो । मुझे तुम्हारे बारे में एक दुखदाई दिन की यातना का भय है।''

(सूरह हूद :२६)

४. शिर्क अर्थात् अल्लाह के सिवा किसी और को ख़ुदा अथवा पूज्य ठहराना या बुतों (मूर्ति) की पूजा अर्चना करना ऐसा गुनाह है जो क्षमा नहीं होगा सिवाय इस के कि आदमी उस से तौबा कर ले !

إن الله لا يغفر أن يشرك به
ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء ومن
يشرك بالله فقد ضل ضللا بعيدا ﴿١١٦﴾

(سورہ النساء:١١٦)

''अल्लाह इस बात को हरगिज़ क्षमा नहीं करेगा कि उस का शरीक (साझी) ठहराया जाए इस के सिवा जो गुनाह वह जिस के लिए चाहेगा माफ कर देगा । और जिस ने अल्लाह का शरीक (साझी) ठहराया वह भटक कर बहुत दूर जा पड़ा ''। (सुरह निसाः११६)

५. तीन ख़ुदाओं और त्रीश्वरवाद की धारणा ग़लत है !

لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث
ثلثة وما من إله إلا إله واحد

(سورۃ المائدہ-٧٣)

''निश्चय ही उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन में का एक है । हालाँकि एक ख़ुदा के सिवा कोई ख़ुदा नहीं ''।

(सूरह माइदा -७३)

६. देवी या देवताओं को लाभ अथवा हानि पहुँचाने वाला समझना

बिलकुल ग़लत है।अल्लाह ही के हाथ में है लाभ और हानि का पहुँचाना !

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ
اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ
لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى
الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ
تَسْتَوِى الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ
شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ
عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ
وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾

(سورہ الرعد۔١٦)

''इन से पूछो आसमानों और ज़मीन का रब (मालिक) कौन है ? कहो अल्लाह। इन से पूछो फिर क्या तुम ने उस को छोड़ कर दूसरों को अपना कर्ता धर्ता ठहरा लिया है जो ख़ुद अपने लिए भी न किसी लाभ का अधिकार रखते हैं न हानि का?कहो क्या अंधा और देखने वाला दोनों बराबर हैं? या अंधेरा और प्रकाश एक समान हैं? या इन के गढ़े हुए शरीकों (साझी दारों)ने उसी तरह पैदा किया है जिस तरह उसने पैदा किया है जिस की वजह से पैदा करने का मामला उन पर संदिग्ध हो गया? कहो अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह यकता है सब को अपने क़ाबू में रखने वाला'' (सूरह रअद :१६)

७.बुत परस्त (मूर्ति पूजक) और इन के बुत (मूर्ती) जहन्नम का ईधन होंगें।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿۹۸﴾
لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ
وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۹۹﴾

(سورۃ الانبیاء۔٩٨۔٩٩)

''तुम और वे चीज़ें जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजा करते हो (अर्थात बुत)जहन्नम का ईधन हैं । तुम्हें ज़रूर वहाँ पहुँचाना है,यदि सच मुच ये ख़ुदा होते तो वहाँ न पहुँचते, और सब को हमेशा उसी में रहना है !'' (सुरह अंबिया-९८-९९)

८.अल्लाह के सिवा किसी अन्य पूज्य के लिए कोई दलील नहीं ।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ
لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ
عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

(سورہ المومنون:١١٧)

''और जो कोई अल्लाह के साथ किसी और को पुकारे जिस के लिए उस के पास कोई दलील नहीं तो उस का हिसाब उस के रब के पास है।निस्संदेह काफिर कभी मुक्ति (फलाह) नहीं पा सकते ।''

(सूरह मोमिनून-११७)

९. अल्लाह के साथ अन्य पूज्यों को पुकारने पर चेतावनी ।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّىْ
لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۵۱﴾

(سورہ الذاریات:٥١)

'' और अल्लाह के साथ कोई अन्य पूज्य न ठहराओ । मैं उस की तरफ से तुम्हारे लिए खुला खबरदार करने वाला हूँ !''

(सूरह ज़रियात :५१)

१०. अल्लाह के बारे में झूठ बोलने वाले और इस्लाम की दअवत को रद्द करने वाले सब से बड़े ज़ालिम ।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ
يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۷﴾

(سورہ الصّف:٧)

'' और उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा बोहतान बाँधे हालाँकि उस को इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो ? अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता । '' (सूरह सफ़ :७)

११. कियामत (प्रलय) आ कर रहे गी, इस में कोई संदेह नहीं !

اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۹﴾

(سورۃ المؤمن۔٥٩)

''क़ियामत की घड़ी निश्चय ही आने वाली है इस में कोई संदेह नहीं । परन्तु अधिकांश लोग ईमान नहीं लाते । ''

(सूरह मोमिन :५९)

१२. क़ियामत का समय अल्लाह ही को मालूम है ।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ
إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾
قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾

(سورہ الملک ۲۶،۲۵)

'' ये लोग कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब पूरा होगा ? कहो इस का इल्म ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है । मैं तो बस खुला सचेत करने वाला हुँ ''।

(सूरह मुल्क :२५,२६)

१३. अपने रब की दअवत (निमंत्रण) क़ुबूल कर लो, इस से पहले कि क़ियामत का दिन आए !

اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُ
مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُم مِّن مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ
وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ﴿٤٧﴾

(سورہ الشوریٰ:۴۷)

'' अपने रब की दअवत क़ुबूल कर लो इस से पहले कि अल्लाह की तरफ़ से एक ऐसा दिन आए जिस को टाला न जा सकेगा। उस दिन तुम्हारे लिए कोई पनाह की जगह न होगी और न तुम (अज़ाब को)दफ़ा कर सकोगे !''

(सूरह शूरा :४७)

१४. क़ियामत का सूर अर्थात क़ियामत की तुरही ।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم
مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾

(سورہ یٰس:۵۱)

''और सूर (तुरही) फ़ूका जाएगा तो यकायक वे अपनी क़ब्रों से निकलकर अपने रब की तरफ़ दौड़ पड़ेगें ।''

(सूरह यासीनः ५१)

१५.लोगों के लिए चेतावनी, इस से पहले कि अल्लाह का अज़ाब आ जाए !

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ
فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَىٰ
أَجَلٍ قَرِيبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ

الرُّسُلَ ۗ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُم مِّن
قَبْلُ مَا لَكُم مِّن زَوَالٍ ﴿٤٤﴾

(سورۃ ابراہیم:۴۴)

''लोगों को उस दिन से ख़बरदार कर दो जब कि अज़ाब उन को आ लेगा।उस समय ज़ालिम कहेंगें ऐ हमारे रब !हमें थोड़ सी अवधि के लिए मोहलत दे दे,हम तेरी दअवत (आहवान) क़ुबूल करेंगे ।(जवाब दिया जाएगा) क्या तुम इस से पहले क़समें खा खा कर नहीं कहते थे कि हमें (दुनिया से) कहीं जाना नहीं है ''।

(सूरह इब्राहिम :४४)

१६. काफिर क़ियामत के दिन किस तरह उठेंगें ।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ﴿٦﴾
خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ
الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ﴿٧﴾
مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ
هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾

(سورہ القمر ۸،۶)

''तो इन से मुँह फेर लो । जिस दिन पुकारने वाला एक सख्त नागवार चीज़ की तरफ पुकारेगा उनकी निगाहें अपमान से झुकी हुई होंगी और वे इस तरह क़ब्रों से निकलेंगे कि जैसे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं । पुकारनेवाले की तरफ सहमे हुए दौड़ रहे होंगे । उस समय काफिर कहेंगे यह बड़ा कठिन दिन है!''

(सूरह क़मर :६से ८)

१७. काफिरों (इनकार करने वालों) की जहन्नम पर पेशी और उन का सत्य को स्वीकारना ।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ
هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾

(سورہ احقاف:۳۴)

'' जिस दिन काफिर जहन्नम की आग पर पेश किए जाऐंगे (उन से पूछा जाएगा)क्या यह हक (सत्य) नहीं है ? वे कहेंगे हाँ हमारे रब की कसम (निश्चय ही यह सत्य है)फ़रमाएगा तो चखो अज़ाब (यातना)का मज़ा अपने कुफ़्र (इन्कार) की पादाश में '' !

(सूरह अहक़ाफ :३४)

१८. शिर्क (मूर्ती पुजा) करनेवाले जालिमों का अंजाम ।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

(سورہ الاعراف :۴۱)

'' उन के लिए जहन्नम ही का बिछौना होगा और ऊपर से ओढ़ना भी उसी का होगा । हम जालिमों को इसी तरह बदला देते हैं ''।

(सूरह आराफ :४१)

१९. कुफ्र (इन्कार) करने वालों का अन्जाम ।

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا
قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن
فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾
يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾
وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾
كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا
مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا
فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾

(سورہ الحج:۱۹،۲۲)

''ये दो गिरोह हैं जिन्होने अपने रब के बारे में झगड़ा किया तो जिन्होंने कुफ्र किया उन के लिए आग के लिबास काट दिए गये हैं, उन के सिरों पर खौलता हुआ पानी डाल दिया जाएगा ।
जिस से उन के पेट के अन्दर की चीजें और उन की खालें गल जाऐंगी ।तथा उन को सज़ा देने के लिए लोहे के गदाऐं होंगे। जब कभी वे उस घुटन से निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जाऐंगे कि चखो अब जलने की यातना का मज़ा'' ।

(सूरह हज्ज:१९ से २२)

२०. क़ियामत को झुठलाने वालों का अन्जाम ।

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾
إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ
سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾

''हक़ीकत यह है कि इन लोगों ने क़ियामत की घड़ी को झुठलाया है । और जो इस घड़ी को झुठलाए उस के लिए हम ने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है । वह जब दूर से उन को देख लेगी तो ये उन के क्रोध

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا
هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾
لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا
ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾

(سورۃ الفرقان:۱۱،۱۴)

और उस के दहाड़ने की आवाज़ें सुनेंगे । और जब यह जकड़े हुए उस की किसी तंग जगह में डाल दिए जाऐंगे तो अपनी मौत को पुकारेंगे । आज एक मौत को नहीं बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो''।

(फ़ुरकानः ११ से १४)

२१. काफिरों का जहन्नम में सच्चाई को मानना ।

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٦﴾ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا
لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ﴿٧﴾
تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ
سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٨﴾
قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا
مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن
شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ﴿٩﴾
وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ
مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿١٠﴾
فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ
السَّعِيرِ ﴿١١﴾

(سورۃ الملک:۶،۱۱)

''जिन लोगों ने अपने रब से कुफ्र किया है उन के लिए जहन्नम की यातना है और वह बहुत बुरा ठिकाना है । जब वे उस में फ़ेकें जाऐंगे तो उस के दहाड़ने की आवाज़ सुनेंगे और वह जोश मारती होगी। क्रोध की शिद्दत से फटी जाती होगी। हर बार जब कोई समूह उस में डाला जाएगा तो उस के पहरेदार उस से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई ख़बरदार करने वाला नहीं आया था ? वे जवाब देंगे, हाँ ख़बरदार करने वाला हमारे पास आया था लेकिन हम ने उसे झुठलाया और कहा कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा है। तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो । और वे कहेंगे अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख वालो (नर्क) में शामिल न होते। इस तरह वे अपने गुनाहों को स्वीकार करेंगे, तो लानत है दोज़खियों पर।''

(सूरह मुल्क :६ से ११)

२२. काफिरों को जहन्नम की ओर ले जाने का दृश्य :

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ
إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ
عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ
لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ
حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾
قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾

(سورۃ الزمر-٧١-٧٢)

''और काफिरों को जहन्नम की तरफ समूह दर समूह हंकाते हुए ले जाया जाएगा ।यहाँ तक कि जब वे उस के पास पहुँचेंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाऐंगे।और उस के पहरेदार उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसुल नहीं आए थे, जिन्हों ने तुम्हारे रब की आयतें तुम्हें सुनाई हों और तुम्हारे इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराया हो? वे कहेंग जरूर आए थे, लेकिन काफिरों पर अज़ाब (यातना) का फरमान ज़रूर पूरा हो कर रहा। कहा जाएगा दाखिल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में।इस में हमेशा रहोगे। तो क्या बुरा ठिकाना है अहंकारियों का''।

(सूरह ज़ुमर:७१,७२)

२३.अल्लाह के समक्ष पेशी को झुठलाने वाले क़ियामत के दिन पछताऐंगे।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا
فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ

''तबाही में पड़ गये वे लोग जिन्हों ने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठलाया। यहाँ तक कि जब वह घड़ी अचानक सामने आ प्रकट होगी तो कहेंगें अफ़सोस !इस मामले में हम से कैसी कोताही हुई।और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे।तो क्या बुरा

أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾ (سورۃ انعام:٣١)

बोझ है जो ये उठा रहे होंगे ।''

(अन्आम : ३१)

२४. अपने रब की ओर से आए हुए हक़ (सत्य)का इन्कार करनेवाले जहन्नम की लपेट में ।

وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِن
وَمَن شَاءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ
سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ
الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

(سورۃ الکہف:٢٩)

''और कहो यह हक तुम्हारे रब की तरफ़ से है तो जिस का जी चाहे ईमान लाए और जिस का जी चाहे कुफ्र करे।हम ने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातों ने उन्हें घेर लिया है।अगर वे पानी के लिए फरियाद करेंगे तो उन्हें ऐसा पानी दिया जाएगा जो पिघली हुई धात् की तरह होगा और उन का मुँह भून डालेगा । क्या ही बुरी है पीने की चीज़ और क्या ही बुरी आरामगाह (विश्राम स्थल)''!

(सूरह कहफ : २९)

२५. जहन्नम में दुखदायिनी यातनाऐं ।

مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ
صَدِيدٍ ﴿١٦﴾ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ
وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ
مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِن وَرَائِهِ
عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٧﴾

(سورۃ ابراھیم:١٦،١٧)

'' उस के आगे जहन्नम है और उसे पीप पिलाया जाएगा जिसे वह घूँट घूँट कर के पियेगा । मगर हलक़ से आसानी के साथ उतार न सकेगा। मौत हर तरफ से उस पर आएगी मगर वह मर न सकेगा और आगे एक कठोर यातना का उसे सामना करना होगा'' !

(सूरह इब्राहीम : १६ से १७)

२६.काफिर जहन्नम में तमन्ना करेंगे कि काश हमने अल्लाह और उस

के रसूल का अनुपालन किया होता ।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ
يٰلَيْتَنَا أَطَعْنَا اللّٰهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾

(سورۃ الاحزاب:٦٦)

''जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पलट दिए जाऐंगे उस समय वे कहेंगे काश हमने अनुपालन किया होता अल्लाह का, और अनुपालन किया होता रसूल का !

(अल् अहजाब:६६)

ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी

लेकिन जो लोग ईमान लाऐं और अच्छे कर्म करें उन को क़ुर्आन जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाता है !

१. ईमान वालों के लिए बहुत बड़ा इनाम ।

إِنَّ هٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ
وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ
الصّٰلِحٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾

(سورۃ بنی اسرائیل:٩)

'' निश्चय ही यह क़ुर्आन उस रास्ते की तरफ रहनुमाई करता है जो बिलकुल सीधा है और ईमान वालों को जो अच्छे कर्म करते हैं इस बात की खुशख़बरी देता है कि उन के लिए, बहुत बड़ा इनाम है !''

(सूरह बनी इस्राईल :९)

२. ईमान वालों को जन्नत में दाख़िल करने का अल्लाह का वादा !

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾

(سورۃ النساء:١٢٢)

'' और जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किए उन को हम ऐसे बाग़ो में दाखिल करेंगें जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी । वे वहाँ सदा सर्वदा रहेंगे । अल्लाह का वादा सच्चा है । और अल्लाह से बढ़ कर कौन अपनी बात में सच्चा हो सकता है !''

(सूरह निसा :१२२)

३. जन्नत में पाकीज़ा मकान और सब से बड़ी चीज़ अल्लाह की प्रसन्नता ।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا
وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنّٰتِ عَدْنٍ ۚ
وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ أَكْبَرُ ۚ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

(سورۃ التوبہ:٧٢)

''ईमान लाने वाले पुरषों और ईमान लाने वाली स्त्रियों से अल्लाह ने वादा कर रखा है कि वह उन्हें ऐसे बागों को प्रदान करेगा जिन के निचे नहरें बह रही होंगी। वे उन में हमेशा रहेंगे। और उन सदा सर्वदा रहने वाले बागों में पाकीज़ा मकानात होंगे और उन्हें अल्लाह की खुशनूदी (प्रसन्नता) हासिल होगी जो सब से बड़ी चीज़ है । यही महान सफ़लता है''।

(सूरह तौबा :७२)

४. जन्नत में आकर्षक लिबास और सौंदर्य सामग्री !

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ
أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا
خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ
فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۚ
وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ (سورۃ الکہف:٣١)

''उन के लिए हमेशा रहनेवाले बाग़ हैं जिन के निचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे बारीक और मोटे रेशम के सब्ज कपड़े पहनेंगे और तख्तो पर तकिया लगाए बैठे होंगे।क्या ही अच्छा सिला है और क्या ही अच्छी आरामगाह !''

(सूरह कहफ :३१)

५. जन्नत में रिज़्क (नेअमतों) की बोहतात ।

جَنّٰتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهُ
بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ﴿٦١﴾
لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلٰمًا ۖ وَلَهُمْ

''हमेशा रहने वाले बाग़ जिन का रहमान ने अपने बन्दो से अप्रत्यक्ष वादा कर रखा है नि:संदेह उस का वादा पूरा हो कर रहना है। वहाँ वे

رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا
مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾
(سورۃ مریم:٦١، ٦٣)

कोई व्यर्थ की बात नहीं सुनेंगे ।जो कुछ सुनेंगे सलामती ही की बात होगी।और उन्हें सुबह व शाम अपना रिज़्क मिलता रहेगा।यह है वह जन्नत जिस का वारिस हम अपने बन्दों में से उन को बनाऐंगे जो अल्लाह से डरते रहे।''

(सूरह मरयम ६१ से ६३)

६. जन्नत में जो चीज़ तलब की जाए गी मिलेगी ।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾
هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ
عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾
لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾
(سورۃ یٰس:٥٥،٥٧)

''आज जन्नत वाले अपने मश्ग़लों में ख़ुश ख़ुश होंगे। वे और उन की पत्नियाँ साये में तख़्त पर तकिया लगाए बैठे होंगे । उस में उन के लिए मेवे होंगे और जो कुछ वे तलब करेंगे वह उन्हें मिलेगा ।''

(सूरह यासीन ५५,से ५७)

७. अपने रब से डरने वालों को जन्नत की तरफ ले जाए जाने का दृश्य :

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا
حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ
فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ

'' और जो लोग अल्लाह से डरते रहे उन्हें समूह दर समूह जन्नत की तरफ ले जाया जाएगा; यहाँ तक कि जब वे उस के पास पहुँचेंगे और उस के दरवाज़े खोल दिए गए होंगे, तो उस के पहरेदार उनसे कहेंगे सलाम हो तुम पर,अच्छे हो तुम, दाखिल हो जाओ इस में हमेशा के लिए । वे कहेंगे शुक्र है अल्लाह का जिस ने

نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ فَنِعْمَ
اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾
(سورۃ الزمر ـ ٧٣ ـ ٧٤)

हमारे हक में अपना वादा सच्चा कर दिखाया, और हमको जमीन का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें रहें।तो क्या खूब इनाम है नेक अमल करने वालों का ।''

(सूरह ज़ुमर ७३,७४)

८.जिन लोगों ने अल्लाह को अपना रब मान लिया उन पर मौत के समय फ़रिश्तों का उतरना और जन्नत की खुशखबरी !

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا
تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا
تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ
تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ
اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾
نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾
(سورۃ حم السجدہ:٣٠ ـ ٣٢)

''जिन लोगों ने कहा अल्लाह हमारा रब (मालिक) है फिर उस पर जम गये नि:संदेह उन पर फरिश्ते नाज़िल होते हैं कि न डरो और न ग़म करो और खुश हो जाओ जन्नत की खुशखबरी से जिस का तुम से वादा किया जा रहा था, हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आखिरत में भी हैं । उस में तुम्हरा जो दिल चाहेगा वह तुम्हें मिलेगा और जो चीज़ भी तुम तलब करोगे तुम्हें मिलेगी।यह अतिथि सामग्री है उस (हस्ती) की तरफ से जो क्षमा करने वाला और रहम करनेवाला है ।''

(सूरह हामीम अस्सज्दा - ३०से ३२)

९. जन्नत में हूरों से शादी।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾
فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾ يَّلْبَسُوْنَ مِنْ
سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾

''अल्बत्ता अल्लाह से डरने वाले अमन के मकाम में होंगे, बागों और स्त्रोतों में । बारीक और मोटे रेशम के लिबास पहने आमने सामने बैठे होंगे।इस तरह

كَذٰلِكَ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾
يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾
لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ
الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾
فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾

(سورة الدخان:٥١-٥٧)

वे सम्मानित किए जाऐंगे, और खूबसूरत आँखों वाली हूरों से हम उन का ब्याह कर देंगे । वहाँ वे इत्मेनान से हर तरह के मेवे तलब करेंगे । पहली मौत के बाद वे किसी मौत का मज़ा नहीं चखेंगे और अल्लाह उन्हें जहन्नम के अज़ाब से सुरक्षित रखेगा । यह तुम्हारे रब का फ़ज़्ल (अर्थात उस के उदार अनुग्रह) से होग। यही है बड़ी सफलता''।

(सूरह दुखान ५१से ५७)

१०. जन्नत में पीने की चीज़ों की नहरें !

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۚ فِيْهَآ
اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ
لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ
لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۚ وَلَهُمْ
فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ

(سورة محمد:١٥)

'' उस जन्नत की विशेषता जिसका परहेज़गारों से वादा किया गया है कि उस में ऐसे पानी की नहरें बह रही होंगी जिस में कोई परिवर्तन नहीं होगा, और नहरें दूध की जिस का ज़ायका नहीं बदलेगा, और नहरें ऐसी शराब की जो पीनेवालों के लिए बेहद लज़ीज़ होंगी । और नहरें साफ़ स्वच्छ शहद की। वहाँ उन के लिए हर प्रकार के फल होंगे और उन के रब की तरफ से क्षमा''!

(सूरह मुहम्मद :१५)

११. जन्नत में ईमान वालों से उन की ईमान वाली सन्तानें मिला दी जाऐंगी ।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ
بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ
اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ

(سورة الطور:٢١)

''और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद भी ईमान के साथ उन के पीछे चली हम उन की औलाद को भी उन से मिला देंगे और उन के कर्मों में से कुछ भी कम न करेंगे !''

(सूरह तूर :२१)

१२. जन्नत की सुंदरियाँ (अप्सराऐं)।

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

''जैसे कि याकूत और मर्जान हैं ।''

(सूरह रहमान :५८)

१३. जन्नत की विशालता ।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا
كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ
يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾

(سورة الحديد:٢١)

''एक दूसरे से आगे बढ़ो अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की तरफ जिस की विशालता आसमान और ज़मीन की विशालता जैसी है । वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान रखते हैं ।यह अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है जिसे चाहता है प्रदान करता है।और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल (महान अनुग्रह) वाला है ।''

(सूरह हदीद :२१)

१४. नेमत भरी जन्नत का दृश्य ।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾
مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا
شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾ وَدَانِيَةً
عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾
وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ
وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ﴿١٥﴾

'' और उन के सब्र (धैर्य) के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास प्रदान किया ।वहाँ वे तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। न उन्हें धूप की सख़्ती महसूस होगी और न सर्दी की शिद्दत। उस के साये उन पर झुके हुए होंगे और उस के गुच्छे झुक कर लटक रहे होंगे। उन के आगे चाँदी के

قَوَارِيرَا۠ مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا (١٦)
وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا (١٧)
عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا (١٨)
وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ
إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا (١٩)
وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا
وَمُلْكًا كَبِيرًا (٢٠) عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ
خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ
مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا (٢١)
إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ
سَعْيُكُم مَّشْكُورًا (٢٢)
(سورۃ دھر: ١٢-٢٢)

बर्तन और शिशे के गिलास घूम रहे होंगे,शीशे भी वह जो चाँदी के होंगे और उन के पैमाने वे स्वयं निर्धारित करेंगे। उन को वहाँ ऐसी शराब के जाम पिलाए जाऐंगे जिस में सोंठ का सम्मिश्रण होगा। यह एक स्रोत होगा। जिस को सलसबील कहा जाता है। उन के पास ऐसे लड़के घूम रहे होंगे जो हमेशा उसी सिन (आयु) के रहेंगे। तुम उनको देखो तो समझो कि ये बिखरे हुए मोती हैं।वहाँ जिधर भी देखोगे तुम्हें नेमतें ही नेमतें और महान बादशाही दिखाई देगी। उन के ऊपर बरीक रेशम के सब्ज़ और अतलस **(Satin)** के कपड़े होंगे। उन को चाँदी के कंगन पहनाए जाऐंगे और उन का रब उन को बहुत ही पाकीज़ा शराब पिलाए गा।यह है तुम्हारा बदला, और तुम्हारी कोशिश क़ुबूल हुई !''
(सूरह दहर :१२ से २२)

१५. जन्नती अपने रब से खुश और उन का रब उन से खुश !

جَزَاؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ (٨)
(سورۃ البیّنۃ: ٨)

''उन का ईनाम (प्रतिफल) उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके निचे नहरें बह रही होंगी। वे उन में सदा सर्वदा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी।और वे उस से राज़ी ! यह (इनाम) उस के लिए है जो अपने रब से डरे ।''
(सूरह बय्यनः -८)

प्रश्नचिन्ह

क़ुर्आन की इन आयतों के द्वारा आप पर अपने रब की हुज्जत क़ायम हो जाती है। अर्थात ऐसी तर्क सिद्ध हो जाती है कि बचने का कोई बहाना नहीं रह जाता है।अब आप के सामने प्रश्न यह है कि आप अपने रब (पालन कर्ता, खुदा) की हिदायत तथा उस का सुझाया हुआ मार्ग स्वीकार करते हैं या नहीं । अगर स्वीकार करते हैं, और हर न्याय प्रिय व्यक्ति से यही आशा की जा सकती है, तो आपको अपना रब नवाज़ेगा, आप बेहद पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे जिसमें रूह का सुकून भी होगा और दिल का सुख भी । जब आप इस दुनिया से कूच करेंगे तो फ़रिश्ते आप को जन्नत की खुशखबरी सुनाऐंगे और आप की रूह परलोक में पूरे आनन्द में होगी और क़ियामत के दिन जो अतिशीघ्र आनेवाला है और जब सारे इन्सान दोबारा ज़िन्दा कर के हश्र के मैदान में हिसाब के लिए एकत्र किए जाऐंगे तो आप का चेहरा ईमान के नूर से खिला पड़ रहा होगा और आप सलामती के साथ हिसाब के मरहले को तय कर के अल्लाह की कृपा से जन्नत में पहुँच जाऐंगे जो हमेशा का घर और हमेशा बाक़ी रहने वाली सफलता का स्थान है।आप पर अपने रब की रहमतों की बारिश होगी और किसी भी प्रकार का कोई कष्ट आप को छूऐगा नहीं ।लेकिन अगर (ख़ुदा न करे) आप ने क़ुर्आन के बताए हुए सीधे मार्ग को न अपनाया, उस के पैगंबर पर ईमान नहीं लाए और उस के आदेशनुसार ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी तो ख़ूब समझ लीजिए कि आप अपने सुधार का क़ीमती अवसर जो इस दुनिया में आप को मिला हुआ है खो रहे हैं और अपने को जहन्नम का भागीदार बना रहे हैं।ऐसी सुरत में न आप को इस ज़िन्दगी में दिली सुख और शान्ति मिल सकेगी और न दूसरी जिन्दगी में । मौत के समय यातना देनेवाले (अज़ाब के) फरिश्तों से आप को वास्ता पड़ेगा ।आप की रूह क़ैदखाने में होगी जहाँ कठोर यातनाऐं सहनी पड़ेंगी और फिर जब क़ियामत के दिन सब लोगों को उन के शरीर सहित दोबारा उठाया जाएगा तो आप अपने को बड़ी दयनीय दशा में पाऐंगे । जिन जिन को पूज्य बना

कर पूजा वे सब हवा हो जाऐंगे । कोई भी मदद के लिए नहीं आएगा और आप को अपने रब के समक्ष अपनी धारणाओं, मान्यताओं, आस्थाओं तथा अपने कर्मों की जवाबदेही करना होगी ! यह मरहला अत्यन्त कठिन होगा वहाँ कुफ्र और शिर्क (मूर्तीपूजा) को क्षमा नहीं किया जाएगा । और इस संगीन जुर्म की पादाश में जहन्नम की कभी समाप्त न होने वाली सज़ा भुगतनी होगी ! कैसा बुरा अन्जाम है कुफ्र और शिर्क करने वालों का !

आप का फैसला

ज़िन्दगी के ये क्षण जो आप को प्राप्त हैं बहुत क़ीमती हैं अत: आप ऐसा फैसला करें जो आप पर आप के रब की राह खोलने वाला आप को उस तक पहुँचाने वाला और आखिरत की सफलता दिलाने वाला हो। इस सिलसिले में सबसे बड़ी रूकावट यह गलत विचार है कि ख़ुदा तक पहुँचने के बहुत से तरीके हो सकते हैं और वे सभी सही हैं । यह बात ऊपर से तो भली मालूम होती है लेकिन है सच्चाई के विपरीत । दुनिया का एक ख़ुदा मानना तथा हज़ारो ख़ुदा मानना, अपने वास्तविक रब की परस्तिश करना तथा मनगढ़ंत ख़ुदाओं यहाँ तक कि ईंट पत्थर की परस्तिश (पूजा) करना, अपने सच्चे रब के आदेशों पर चलना तथा उस की तरफ झूठ गढ़ के ग़लत और नाजायज तौर तरीक़ों पर अमल करना अगर समान हो सकता है तो रोशनी और अंधकार, रात और दिन तथा ज्ञान और अज्ञान दोनों को समान मानना पड़ेगा । जबकि मानव बुद्धी दोनों के अन्तर से परिचित है, फिर मनुष्य ख़ुदा के मामले में क्यों ठोकर खाता है । इस का कारण उस का धर्म के मामले में जज़्बाती होना है । इस लिए उस का फैसला समझदारी का नहीं होता । दूसरी बड़ी रुकावट वह समुदाय है जिसका कि वह अंग है !वह समझता हैं कि आदमी जिस समुदाय में रहता है उस की धारणाओं वा मान्यताओं के खिलाफ जाना मुसीबत को न्योता देना है । परन्तु सच्चाई यह है कि कोई मुसीबत अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर नाज़िल नहीं होती और मनुष्य के सब्र और धैर्य का हर हाल में इम्तिहान होता है । और दुनिया तो बस चन्द दिनों की है इस लिए यहाँ की तकलीफ आखिरत (Hereafter) की तकलीफ के मुक़ाबले में कोई हक़ीक़त

नहीं रखती और न अपने बीवी बच्चों को ख़ुश करने के लिए अपने रब (ख़ुदा) की नाराज़गी मोल ली जा सकती है । अत:अपने रब पर भरोसा करते हुए पूरे पूरे हौसले के साथ सत्य को स्वीकार करने का फैसला करना चाहिए !जो व्यक्ति सत्य का तलबगार होता है उस का रब उस पर हिदायत (मार्गदर्शन) की राह खोल देता है और उस की ज़बान से बेसाख्ता कलिमा-ए-शहादत अदा हो जाता है वह पुकार उठता है :-

اَشْهَدُاَنْ لَّااِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشهَدُ
اَنَّ مُحَمَّدًا رَّ سُوْلُ اللّٰهِ

''मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य (खुदा)नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ।''

OOOOOO

زیر اہتمام: محمد صدیق قریشی
Pixel Arts
Mobile : 9820790615
Printed at: Fatima Printers
Tilak Nagar, Saki Naka Mumbai - 400070

इदारे की हिन्दी प्राकाशन

✷ दअवतुल क़ुर्आन

तफ़सीर; **शम्सपीरज़ादा (रह.)**

हिन्दीअनुवाद ; **मुहम्मद नसरुल्लाह**

जिल्द१

(पारा१से पारा१०तक)सूरह फातिहा ता सुरह तौबा ३००/-

जिल्द२

(पारा ११ से पारा२०तक)सूरह यूनुस ता सूरह अंकबूत ३५०/-

जिल्द३

(पारा २१ से पार ३०तक)सूरह रूम ता सूरह नास ४८०/-

मौज़ूअ और ज़ईफ हदीसों का चलन	९/-
क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना जरुरी नहीं	१०/-
तलाक़ कब और कैसे ?	६/-
सुनो अपने रब (पालनहार की)	१४/-
पारा अम्म	१२०/-

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-४००००३

फोन ; 23465005